हाथी
घोड़ा
पालकी

शिशु गीत माला

मूल्य : छह रुपए
संस्करण : 1982
©प्रकाशक : शकुन प्रकाशन
3625 सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002
चित्रकार : नारायण बड़ोदिया
मुद्रक : प्रभात आफसैट प्रैस, नई दिल्ली-११०००२

CHILDREN'S RHYMES SERIES IN HINDI

HATHI GHORA PALKI by Saraswati Kumar Deepak : Rs. 6.00
SHAKUN PRAKASHAN, 3625, Subhash Marg,
New Delhi-110002

सरस्वती कुमार 'दीपक'

चंदा मामा

चंदा मामा दूर के
लड्डू मोती चूर के।
आप खाएं थाली में,
हमें खिलाएं प्याली में,
प्याली गई फूट,
मामा गए रूठ।
देख रहे हैं घूर के।
चंदा मामा दूर के।

जगमग जगमग करते तारे

जगमग जगमग करते तारे,
कितने सुंदर, कितने प्यारे,
नील गगन के राजदुलारे ।
जगमग जगमग करते तारे ।
हमको राह दिखाते हैं,
हंसते और हंसाते हैं,
टिमटिम टिमटिम करते तारे,
कितने सुंदर, कितने प्यारे,
ये किसकी अंखियों के तारे ।
जगमग जगमग करते तारे ।

कचौड़ी-पकौड़ी

कूदी धम से गरम कचौड़ी,
बोली उससे अकड़ पकौड़ी—
'तू मुंह फुल्लो, मैं हूं गोरी,
जा थाली से परे निगोड़ी ।'
'अच्छा' कह अड़ गई कचौड़ी,
उठा पकौड़ी, अकड़ निचोड़ी,
बहुत झिंझोड़ी, बहुत मरोड़ी,
उसकी शान हुई दो कौड़ी ।
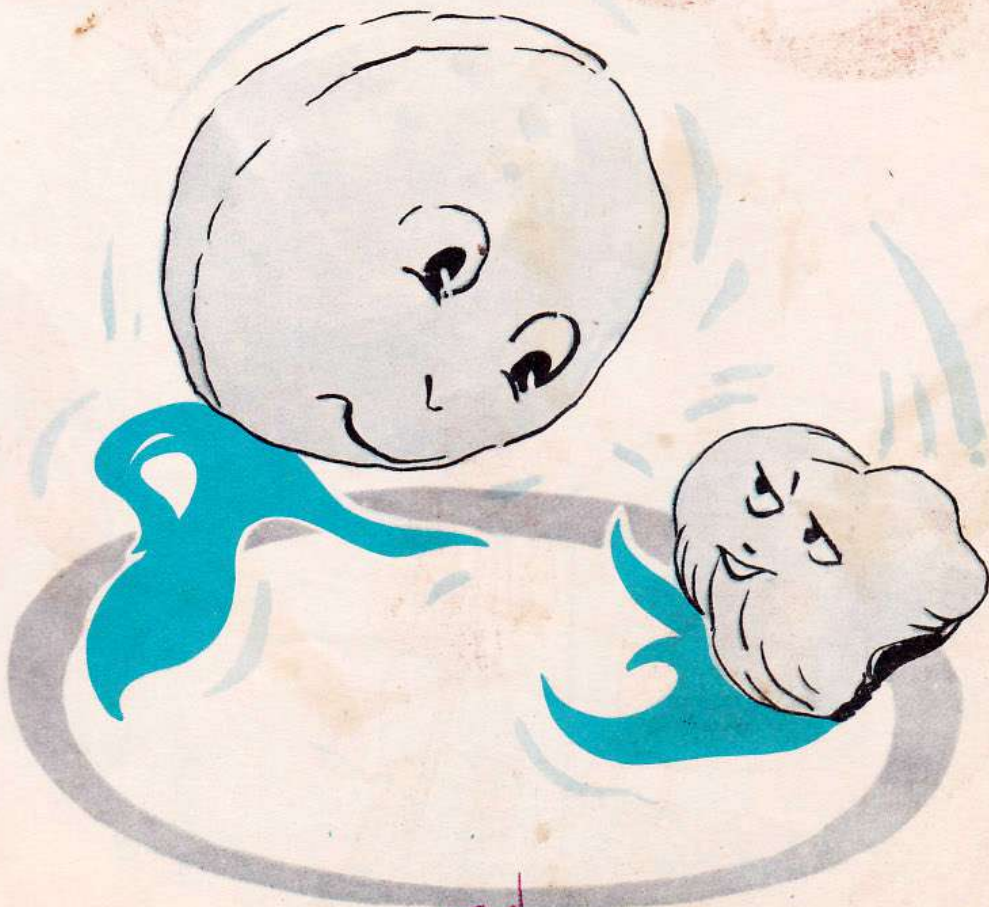
V. good

आम छू, बदाम छू

नटनी का नगाड़ा छू,
ताल का सिंघाड़ा छू,
आम छू, बदाम छू।
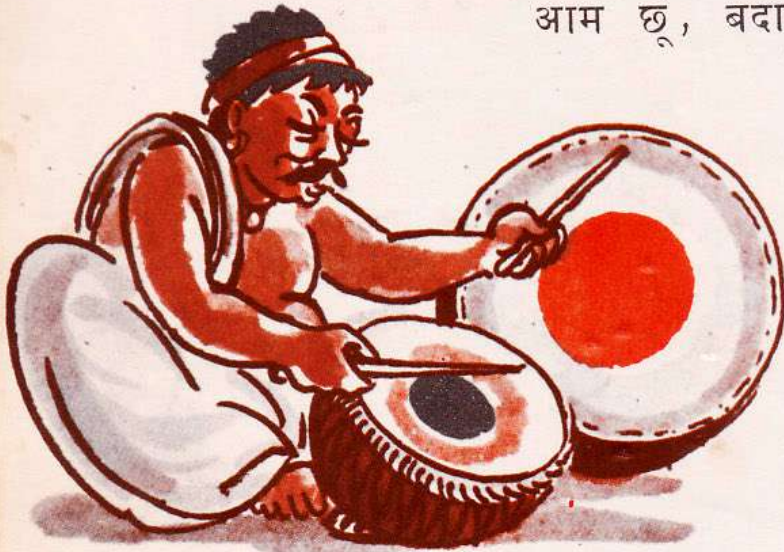
नीम की निबौली छू,
रानी जी की डोली छू,
आम छू, बदाम छू।
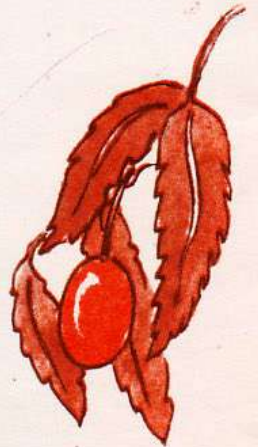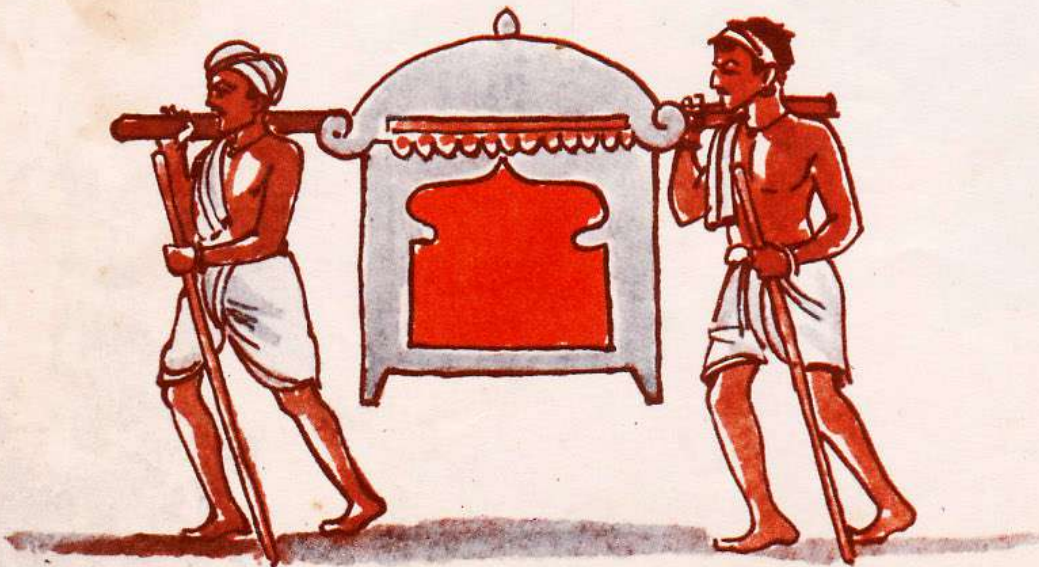
फौज का सिपैया छू,
राजा जी की नैया छू,
आम छू, बदाम छू।

चाची जी का चरखा छू,
काजी का अंगरखा छू,
आम छू, बदाम छू।

कठपुतली की पायल छू,
मोरनी का काजल छू,
आम छू, बदाम छू।

अक्कड़-बक्कड़

अक्कड़,
बक्कड़,
लाल बुझक्कड़ !
कटोरी में कटोरा
बेटा, बाप से भी गोरा,
बोल बोल यह क्या बुझक्कड़ ?
तू भी कोरा अड़ियल है,
तेरी पहेली नरियल है।

अक्कड़,
बक्कड़,
लाल बुझक्कड़,
काले काले बैंगन
कटोरे भरे जाएं,
राजाजी भी मांगें
दिए नहीं जाएं।
बोल बोल ये क्या बुझक्कड़ ?
तू तो बस नौसिखिया है,
नहीं हैं बैंगन, अंखियां हैं।

धम्माधम

भोंदू तोंदू बैठे साथ,
बातें करते पकड़े हाथ ।
छज्जे की चिकनी दीवार,
उस पर फिसले दोनों यार ।
दोनों थे भारी-भरकम,
गिरे चौक में धम्माधम ।
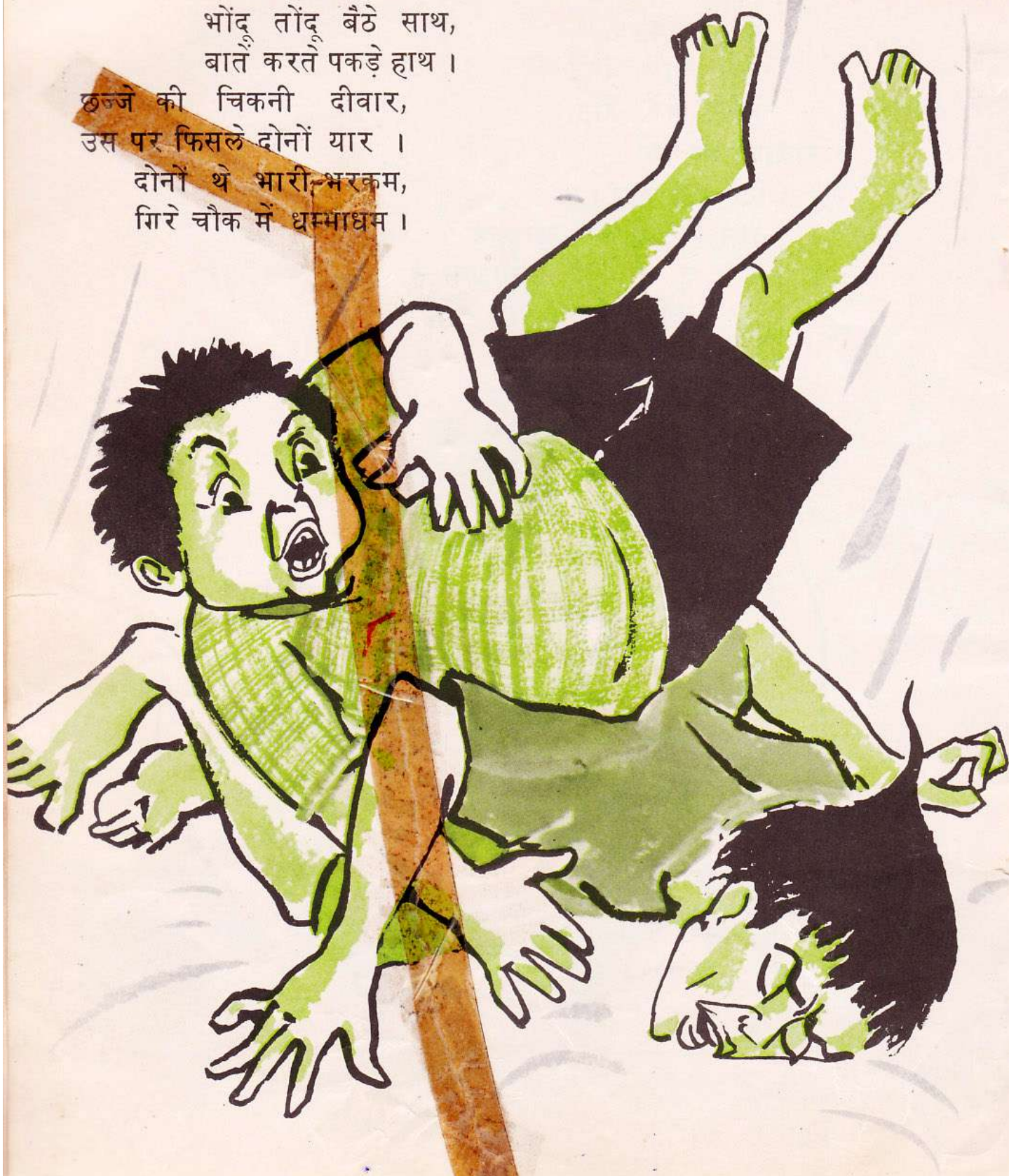
भीगी बिल्ली

कांप रही थी भीगी बिल्ली,
बैठी बनकर थी सिलबिल्ली ।
दांत बजाती कट कट कट,
पंजे करती फट फट फट ।
चूहे उड़ा रहे थे खिल्ली,
कांप रही थी भीगी बिल्ली ।
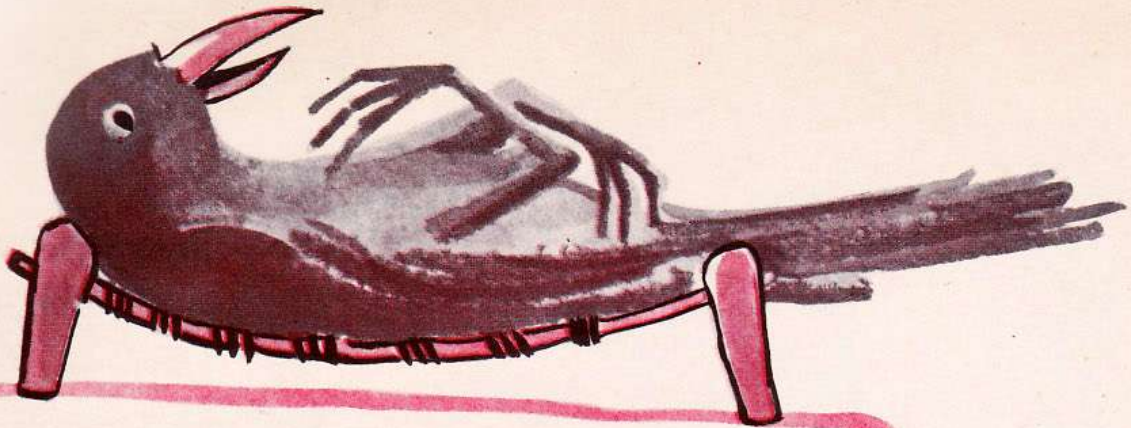
चींटी का है कितना नाम

चींटी चाची भागी भागी,
करती सारे घर का काम,
कौवे काका कांव कांव कर,
करते हैं छत पर आराम।
चींटी का है कितना नाम।
कौवा है कितना बदनाम !
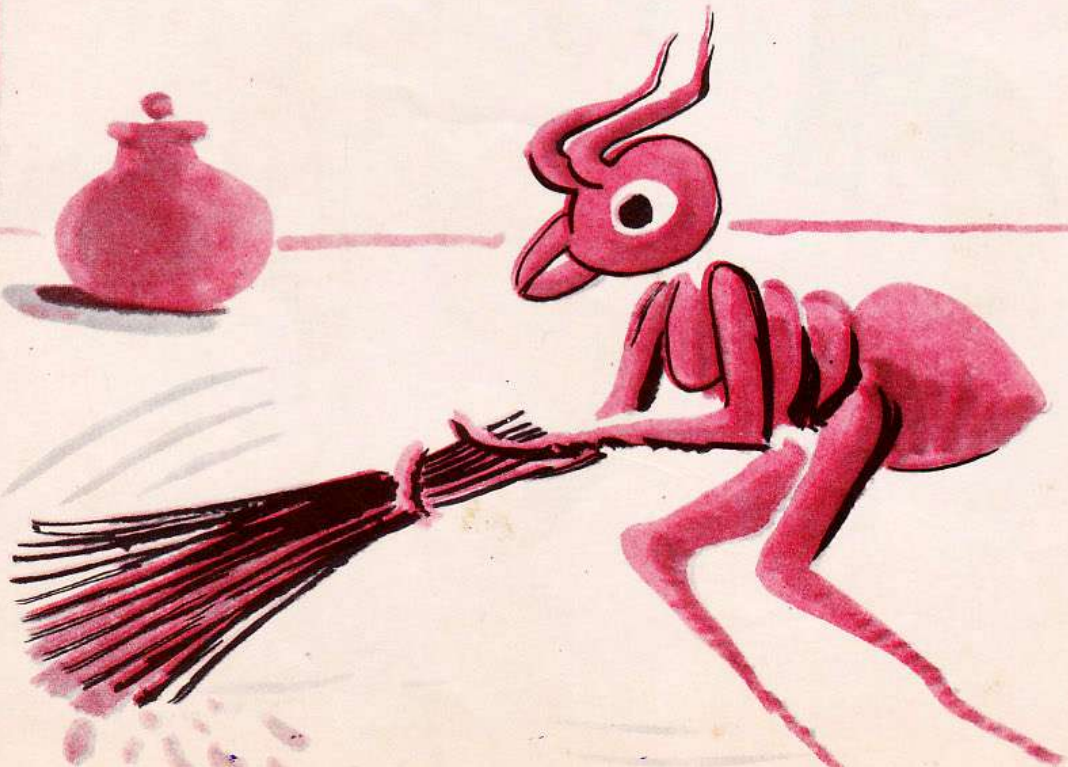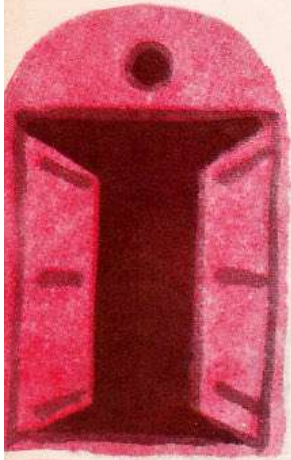
बरसो राम धड़ाके से

बरसो राम धड़ाके से,
बुढ़िया मर गई फाके से ।
जाके पूछा बाँके से,
बांकेमल के काके से,
सरदी पड़ी कड़ाके से—
फिर क्या हुआ ?
होता क्या !
बरसो राम धड़ाके से,
बुढ़िया मर गई फाके से ।
अड़ता कौन लड़ाके से ।
फट फट हुई पटाके से ।
हाथी घिर गया हांके से—
फिर क्या हुआ ?
होता क्या ।
बरसो राम धड़ाके से,
बुढ़िया मर गई फाके से ।

हाथो, घोड़ा, पालकी

हाथी, घोड़ा, पालकी ।
जय कन्हैयालाल की ।
हाथी चलता धम धम धम,
भालू चलता छम छम छम,
देखो शोभा चाल की ।
हाथी, घोड़ा, पाल़की ।
जय कन्हैयालाल की ।
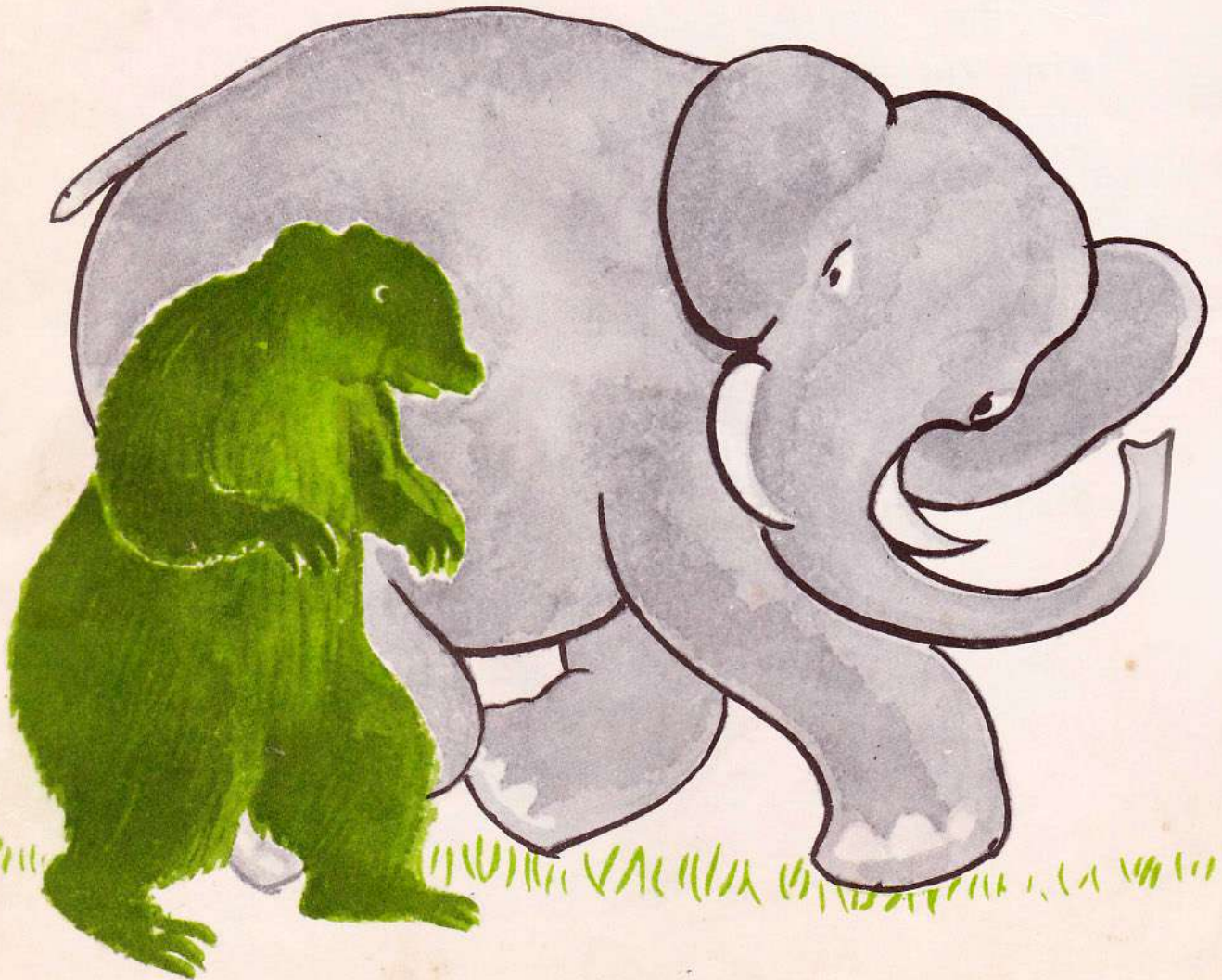
घोड़ा दोड़े टर्रकटम,
ढोल बजाता ढम ढम ढम,
उसकी चाल कमाल की ।
हाथी, घोड़ा, पालकी ।
जय कन्हैयालाल की ।

लिए पालकी चूहे चार,
चूं चूं करते चारों यार,
दुलहिन लाए, लाल की ।
हाथी, घोड़ा, पालकी ।
जय कन्हैयालाल की ।

कुकड़ी (भुट्टा)

अड़ी थी, पड़ी थी

अड़ी थी,
पड़ी थी,
तारों से
वह जड़ी थी ।
राजाजी के बाग में
दुशाला ओढ़े खड़ी थी ।
अड़ी थी
पड़ी थी,
तारों से वह जड़ी थी ।
देख अनाड़ी
मुंह पर दाढ़ी,
जोर से बोला—
यह तो झाड़ी ।
ऐसे अड़ियल सड़ियल से
छड़ी लेकर खड़ी थी ।
अड़ी थी,
पड़ी थी,
तारों से वह जड़ी थी ।

छोटी-सी गुड़िया

छोटी-सी गुड़िया,
नखरे की पुड़िया,
शकल से भोली,
अकल से बुढ़िया ।
खुल खुल खांसी आती है,
खांसी उसे सताती है,
टेक टेक कर लाठी चलती,
दुनिया हंसी उड़ाती है ।
छोटी-सी गुड़िया,
नखरे की पुड़िया ।
टाट का लहंगा पहना है,
पहना कैसा गहना है,
कौन लड़े कमला काकी से,
उसी गली में रहना है ।
छोटी-सी गुड़िया,
नखरे की पुड़िया ।

बीबी, मेंढकी री !

बीबी, मेंढकी री ! तू तो पानी में की रानी ।
कौवा तेरा सगा भतीजा, चील तेरी देवरानी ।
बीबी, मेंढकी री !
टर्रक टूं तू बोला करती,
फुद्दक फुद्दक डोला करती ।
बीबी, मेंढकी री !
तू तो पानी में की रानी ।

पानी पीकर फूला करती,
लहर हिंडोले झूला करती ।
बीबी, मेंढकी री !
तू तो पानी में की रानी ।

बगुला भगत बुलाया करता,
कैसा खेल खिलाया करता ।
बीबी, मेंढकी री !
तू तो पानी में की रानी ।

ताल तलैया की तू रानी,
मेंढक मामा की महारानी ।
बीबी, मेंढकी री !
तू तो पानी में की रानी ।

कौवा चला हंस की चाल

कांव कांव की तान सुनाता,
सुननेवालों को बहकाता,
चला बजाता गाल ।
कौवा चला हंस की चाल ।
तन का काला, मन का काला,
चोर, लबार, बड़ा मतवाला,
रोटी रहा उछाल ।
कौवा चला हंस की चाल ।
हंस है जैसे कपड़ा कोरा,
तन का गोरा, मन का गोरा,
गली न उसकी दाल ।
कौवा चला हंस की चाल ।

चींटी मुर्गी कौवा तोता

चींटी के सिर पर
पानी का हंडा,
हंडे के ऊपर
मुर्गी का अंडा ।
मुर्गी बोली कुड़ कुड़ कुड़
कौवा आया चटपट उड़
कौवे की है काली चोंच
पंजे में है आई मोच ।
टैं टैं करता आया तोता,
कौवे से कहता—'क्यों रोता ?'
कौवे ने झट मारा डंडा,
लुढ़क गया मुर्गी का अंडा,
फूट गया पानी का हंडा ।

चूहे चाचा बने चौधरी

चिड़िया चना उठाकर लाई
चींटी चली पिसाने नाज ।
पंजा चाटे बिल्ली मौसी
रोटी कौन पकाए आज ?
चूहे चाचा बने चौधरी,
कहा नचाकर अपना हाथ—
'बस वह ही रोटी खा सकता
जिसने काम किया है साथ ।'
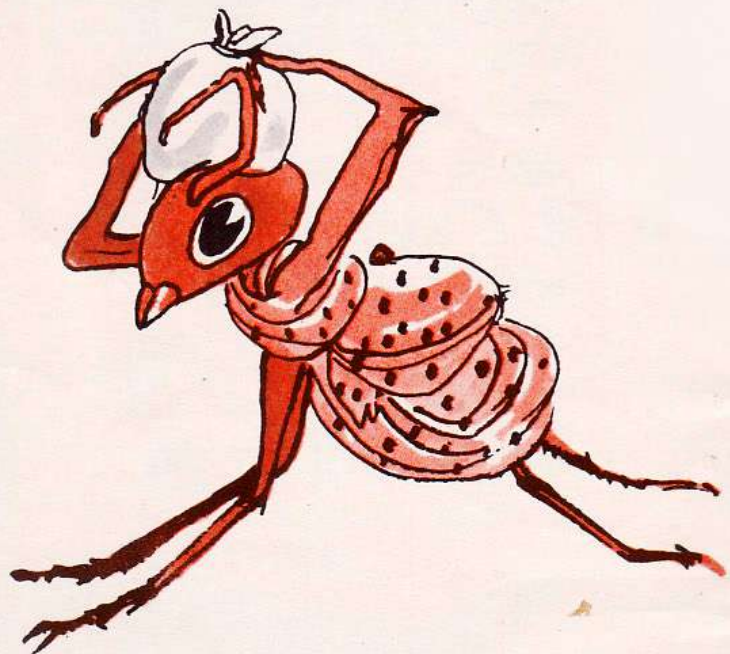
लारा लीरी लोरियां

लारा लीरी लोरियां—
चंदा मामा लेकर आए
दूध की कटोरियां ।
झूला झुला रहीं मुन्ने को
किरनों की किशोरियां ।
परियां खींच रही हंस हंसकर
पालने की डोरियां ।

एक से दस तक

एक बनेंगे, नेक बनेंगे,	एक
दो को अलग नहीं समझेंगे ।	दो
तीन लोक से न्यारे हैं हम,	तीन
चार दिशा के प्यारे हैं हम ।	चार
पांच को परमेश्वर मानेंगे,	पांच
छः ऋतु की चादर तानेंगे,	छः
सात जात का नाम मिटेगा,	सात
आठ अठारह सब निबटेगा ।	आठ
नौ दो ग्यारह होंगे दुखड़े,	नौ
दस दिन में आएंगे सुखड़े ।	दस

शकुन प्रकाशन